INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

65	आतंकवाद : समस्या तथा नियंत्रण	संदीप गोरे	261
66	समकालीन हिंदी कविता में स्त्री संवेदना	संतोष नागरे	265
67	हिंदी लेखिकाओ के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श	डॉ. सुनिल डहाले	271
68	कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में दलित नारी जीवन	डॉ. रजनी शिखरे, अशोक उघडे	275
69	विनय मिश्र की ग़ज़लो में बाजारवाद	डॉ. रजनी शिखरे	278
70	वाहरू सोनवणे की कवितांएँ ('पहाड हिलने लगा है' के संदर्भ में)	संतोष नागरे	281
	मराठी विभाग		
71	पर्यावरण प्रशासन : काळाची गरज	डॉ. व्ही. पी. सांडूर	287
72	भारतीय लोकशाही मधील 'भ्रष्ट्राचार' एक प्रबळ समस्या	डॉ. अंकुशराव चव्हाण	290
73	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	भाग्यश्री पानढवळे	293
74	बीड जिल्ह्यातील इमारत बांधकाम कामगारांच्या आर्थिक स्थितीचा अभ्यास	एस. ई. भोसले	298
75	नक्षलवाद एक सामाजिक समस्या : सामाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. दत्तात्रय भूताळे	304
76	शेतकरी आत्महत्या भारतीय समाजासमोरील अव्हान व उपाय योजना	टी. एस. बिडवे	308
77	नक्षलवादी चळवळीची विचारसरणी	डॉ. रजनी बोरोळे	312
78	भारतीय राजकारण आणि धर्म, जात, भाषा	डॉ. देविदास नरवाडे	318
79	मॉब लिचींग : एक गंभीर समस्या	डी.एन. रिठे	321
80	भ्रष्ट्राचार : एक विवेचन	डॉ. डी.के. ढास	325
81	दहशतवाद	डॉ. बी.एस.चव्हाण	330
82	मानसशास्त्र आणि दहशतवाद : एक आकलन	डॉ. अतुल पवार	335
83	भ्रष्टाचार : कारणे व उपाय	डॉ. भगवान वाघमारे	338
84	नक्षलवाद : भारतातील कडव्या साम्यवादी संघटनांची सशस्त्र चळवळ	डॉ. भारत बिचितकर	342
85	मराठवाड्यातील सिमांत शेतकऱ्यांच्या समस्या आणि त्यावरील उपाय	गोविंद काळे व दीपक भारती	347
86	शेतकरी आत्महत्या : कारणे आणि उपाय	डॉ. दत्तात्रय डुंबरे	350
87	नक्षलवादी चळवळीची विचारधारा आणि व्यवहार	डॉ. एस. पी. घायाळ	353
88	मराठी कादंबरी आणि अर्थकारण : विशेष संदर्भ 'फेसाटी'	डॉ. गोविंद काळे	359
89	सामुहिक हिंसाचार	डॉ. विठ्ठल जाधव	363
90	ब्रिटिशांच्या कायद्याचा भारतीय समाजावर झालेला परिणाम	सचिन पांडव, डॉ. लक्ष्मीकांत जिरेवाड	368
91	वनतोडीमुळे उदभवणाऱ्या समस्यांचे अध्ययन (संदर्भ : पवन तालुक्यातील मिन्सी या गावातील कुटुंब)	ज्योती नाकतोडे	373
92	पर्यावरणविषयक मुद्दा	डॉ. काकासाहेब पोफळे	389
93	स्वयंसहाय्यता गट आणि सशक्तीकरण : एक अवलोकन	डॉ.संतोष काकडे	383
94	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	डॉ.काशिनाथ पल्लेवाड (सावळीकर)	387
95	सामाजिक समस्या आणि नव्वदोत्तरी मराठी कविता	डॉ. समिता जाधव	390
96	भारतातील दारिद्र्य	डॉ. शिवाजी पाते	395
97	जेष्ट नागरिकांच्या समस्यांचे सामाजिक निराकरण	डॉ. सुधीर येवले	400
98	भ्रष्टाचार : भारतीय समाजासमोरील एक ज्वलंत समस्या	डॉ. सुनंदा आहेर	404
99	पर्यावरण आणि भारतीय शेती	डॉ. योगेश पाटील	409
100	समकालीन राजकीय परिस्थिती आणि विरोधी पक्षाची भूमिका	डॉ. भुजंग पाटील	412

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

विनय मिश्र की ग़ज़लों में बाजारवाद

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग अध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड

ग़ज़ल उर्दु भाषा से हिंदी में आयातीत लोकप्रिय काव्यविधा है। दुष्यंतकुमार कहते है कि भाषा उर्दु या हिंदी नहीं है। वह जब अपने-अपने सिंहासन से उतरकर जब आम आदमी की जुबान में व्यक्त होती है तो तब वह हिन्दुस्तानी अवाम् की भाषा और ग़ज़ल बन जाती है। केवल प्रेमिका से गुफ्तगू करनेवाली ग़ज़ल ने रोमानीयत छोडकर मनुष्य के सु:ख- दु:ख एवं समस्याओं से गुफ्तगू करना शुरु किया है। मोहभंग के कारण ग़ज़ल दुष्यंतकुमार की शब्दों में तिखे व्यंग्य नहीं आज की मुहावरे बन गए और हिंदी भाषा में ग़ज़ल लेखन का प्रस्फुटन हो गया। कहा जा रहा है कि हिंदी में ग़ज़ल लेखन की बाढ सी आ गयी है और दुष्यंतकुमार बनने की होड-सी लगी है। परंतु वास्तविकता अलग है। लोग दुष्यंत नहीं ग़ज़लकार बनना चाहते है परंतु आज हिंदी ग़ज़ल ने अपना स्थान निर्माण किया है। अदम गोंडवी से लेकर विनय मिश्र तक कुछ ग़ज़लकार इस प्रकार ग़ज़लें कह रहे है कि हिंदी ग़ज़ल कभी-कभी उर्दूवाले लोगों से भी अधिक लोकप्रिय हो गयी है।

विनय मिश्र 21 वी सदी के प्रतिनिधि ग़ज़लकार है। उन्होंने वर्तमान समय की तमाम समस्याओं को अपने ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का नजाकत भरा प्रयास किया है। "यद्यपि 'सच और है' विनय मिश्र की हिन्दी ग़ज़लों का पहला संकलन है लेकिन हिंदी ग़ज़ल की दुनिया के लिए विनय मिश्र कोई नया नाम नहीं है। इस संग्रह के नाम 'सच और है' में निहित है कि जिस यथार्थ को हम देखते हैं वह वास्तविक सच नहीं है वास्तविक सच पर्दे की ओट में है और उसे दिखाने के वास्ते विनय मिश्र की ग़ज़लें कृतसंकल्प है, ये ग़ज़लें दरहकीकत सामाजिक याथार्थ के गोपन सच का मुखर बयान है।"[1]

वर्तमान समय वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण का दौर है। प्रस्तुत समय में प्रत्येक वस्तु की एक कींमत तय हो रही है। प्रत्येक वस्तु की कींमत तय करते-करते लोग इतने आदी हुए है की लोग मनुष्य को भी पैसों में ओटने का प्रयास कर रहे हैं। चीजों का दाम मनुष्य के जीवन से अधिक महँगा और उँचा हो गया है। बाजार एवं बाजारवाद अमेरिका जैसे विकसित देशों की देन अब विश्व भर में फैल गयी है। बाजार के कारण निर्मित समस्याओं को विनय मिश्र ने अपनी ग़ज़लों मे सार्थक रुप में अभिव्यक्त किया है।

"हमारा काम है बाजार में भी आदमी गढना
तुम्हारा काम घर आँगन को भी बाजार करना है।"[2]

भारत जिस प्रकार "वसुधैव कुटुम्बकम्" की संस्कृतिवाला देश था। परंतु आज भारत में शहरीकरण और भूमंडलीकरण के कारण बाजार के प्रभाव में संस्कृति एवं परंपराओं पर भी असर डालना शुरु किया है। परिवार एवं घर जैसे दुनिया के महत्त्वपूर्ण घटक समाज से अब गायब होने की कगार पर है। जिसके परिणामस्वरुप मनुष्य अकेला एवं निराशा में जीवन जी रहा है। इस बारे में विनय मिश्र लिखते हैं कि-

"बस विकल्पों में रहो हर पग पे समझौता करो
घर नहीं बाजार में ही लाभ का सौदा करो।"[3]

विनय मिश्र घर बनाये रखने की कोशिश्य कर रहे है। जो आज हमें घर टूटता नजर आ रहा है। "विनय मिश्र की ग़ज़लों में मनुष्य की सामाजिक - सांस्कृतिक मुक्ति और उसकी गरिमा की प्रतिष्ठा के पक्ष में बहस करने और अमानवीय सत्ता-

तंत्र का मुखर प्रतिरोध रचने की कोशिश करनेवाले कवि है।"[4] विनय मिश्र जी मनुष्य एवं उसकी मानवीयता का अस्तित्व बनायें रखने की कोशिश कर रहे है। वे अपने ग़ज़लों के माध्यम से इस मानवीय संकट को भी व्यक्त करते है-

"कौडियों में ही बिके अस्तित्व मेरा
क्या यही बाजार की शुभकामना है।"[5]

मनुष्य के अस्तित्व का प्रश्न ग़ज़लकार विनय मिश्र अपनी ग़ज़लों में बहुत बार व्यक्त करते हैं। बाजार मनुष्य पर किस प्रकार हावी हुआ है यह हमें समझातें है। वे कहते है कि घर, गली, गॉव और शहर इस तरह सभी ओर विश्व भर में आज बाजार आ पहुँचा है। परंतु इस वैश्वीकरण और बाजारीकरण के दौर में मनुष्य इन्सान के रुप में नही तो वस्तु के रुप में उसको देखा जा रहा है। उन्हीं के शब्दों में देखिये-

"हर घर इक दूकान है शहर हुआ बाजार
चलता फिरता आदमी बिक्री का सामान।"[6]

मनुष्य अगर बाजार का हिस्सा बनता है तो वह लाभ - हानि के बारे में सोचता रहता है। मनुष्य अपने घर-परिवार और रिश्तो-नातों में भी फिर लाभ-हानि देखता रहता है। प्रस्तुत आदत के बारे में ग़ज़लकार विनय मिश्र लिखते हैं कि,-

"एक छल बाजार की भाषा बना जब से
तब से घर का हाल उजड़े रंग में देखा।"[7]

विश्वनाथ त्रिपाठी जी विनय मिश्र की ग़ज़लों के बारे में कहते है कि "आज की शोषक व्यवस्था में लाभ-लोभ का बोलबाला है। साम्राज्यवादी अपसंस्कृति हमारा-शोषण कर रही है लेकिन उससे भी भयानक बात यह है कि वह हमारा आस्वाद ही बदल रही है।"[8] विनय मिश्र बाजारीकरण तंत्र के यथार्थ को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे है।

प्रस्तुत समय में मनुष्य की स्थिति और आम मनुष्य की समस्या ने उग्र रुप प्राप्त किया है। आजकल ग़ज़लकार विनय मिश्रजी को घर की जगह केवल बाजार नजर आ रहा है। जिससे मनुष्य की भावनाओं का दमन पैसों के कारण होता हुआ नजर आ रहा है। वे कहते हैं कि,

"घर हुआ करता था कल तक जो यहाँ
देखता हूँ अब खुला बाजार है।"[9]

"भूमण्ड़लीकृत विश्व बाजार, विश्व बँक, आर्थिक उदारीकरण और उपभोक्ताबादी अपसंस्कृति के दबाव के साम्राज्यवादी हमले ने सत्य के ऊपर पर्दा डाल दिया है। नतीजन जो आँखो के सामने होता है, वही सच नहीं होता बल्कि सच; घने कुहासे में लिपटकर ऑखों से अक्सर ओझल रहता है। समाज के सारे आत्मीय रिश्ते-नातें मानवीय संवेदना और सभी सांस्कृतिक मूल्यों को आज के उपभोक्तावाद ने एक जिन्स में रुपान्तरित करके खरीद-फरोख्त की वस्तु में तब्दील कर दिया है, उसकी आत्मीयता की गरमाहट तिरोहित हो गई है। विनय मिश्र की ग़ज़लें इस अमानवीय और ख़ुँखार हकीकत से सीधा साक्षात्कार करती है-[10]

"ढोल सियासत पीट रही है जो दिनरात विकास का
पेट भरे का झूठ यही है, भूखों का सच और है।"[11]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि विनय मिश्र ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से वैश्वीकरण के इस बाजारवाद के दौर में आम आदमी के साथ ही मनुष्यत्व के संकट को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। बाजारवाद के दौर में वस्तु के रुप में परिवर्तित होता मनुष्य तथा उसके बौने अस्तित्व को बनायें रखने की कोशिश अपनी ग़ज़लों के माध्यम से सफलतापूर्वक कर रहे है। वे आम आदमी के अस्तित्व से अधिक घर-परिवार में बाजार के अस्तित्व, लाभ एवं हानि

को देखनेवाली विकसित मानवीय प्रवृत्ति को ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त कर रहे है। उन्होंने वर्तमान दौर की भविष्यमयी समस्याओं को अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्ति दी है।

संदर्भ :-

१. सच और है- विनय मिश्र, पृ. 10
२. वहीं- पृ.2
३. वहीं- पृ.118
४. दसखत, विनय मिश्र, पृ.211
५. सच और है- पृ. 93
६. वहीं- पृ.73
७. वहीं- पृ.37
८. वहीं- फ्लॅप से उध्द्रत
९. वहीं- पृ.30
१०. वहीं- पृ.10
११. वहीं- पृ.10